ISSN - 2231 - 2749

NUMBER - 29 2016

JOURNAL OF THE MADHYA PRADESH ITIHAS PARISHAD

Shyadav

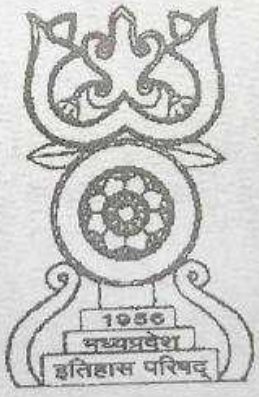

EDITORS

S.D. Guru Dr. R.K. Sharma Dr. Suresh Mishra

हरीसिंह गौर पुरातात्विक संग्रहालय सागर की कलावेरा प्रतिमाएँ

डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव
सहायक प्राध्यापक-प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

भारतीय प्रतिमा विज्ञान में कलावेरा प्रतिमाओं से तात्पर्य ऐसी प्रतिमाओं से है, जिन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया जा सके। इन चलाचल प्रतिमाओं को उनके विविध कार्यों के अनुसार नामकरण किया गया है यथा कौतुक वेर (पूजार्थ), उत्सव वेर (उत्सवार्थ - पर्व विशेष पर बाहर ले जाने के लिये), बलि वेर (दैनिक उपचारात्मक पूजा में उपहारार्थ) तथा स्नपन वेर (स्नानार्थ) । संस्कृत शब्द जैसे मूर्ति, प्रतीक, आर्क, विम्ब, विग्रह, एवं वेर प्रतिमा के पर्यायवाची तो नहीं है लेकिन प्रायः उसका प्रयोग इसी उद्देश्य की पूर्ति करता है। मन्दिर में बड़ी प्रतिमाओं को स्थापित कर बिना हटाये उसकी पूजा की जाती थी, जिसे ध्रुववेरा के नाम से जाना जाता है। वही कलामूर्ति, कलावेरा या उत्सवमूर्ति को उत्सव के दौरान एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता है। कलावेरा प्रतिमाओं का निर्माण प्रस्तर धातु, हाथी दाँत, रत्न, लकड़ी एवं मिट्टी आदि द्वारा किया जाता है। इन प्रतिमाओं के निर्माण का मुख्य उद्देश्य धार्मिक क्रियाकलापों के अतिरिक्त सजावट के लिये भी किया जाता था। ये मन्दिर की दीवारों, मुख्यद्वारों, धरनों, खम्भों एवं मकान के किनारे स्थापित किये जाते थे। ये आकार में छोटी एवं वजन में हल्की होती थी। कलावेरा प्रतिमाओं में विभिन्न धर्मो से संबंधित प्रतिमाएँ, युगल प्रतिमाएँ, अलंकृत वनस्पतियों व पशु-पक्षियों आदि का अंकन मिलता है।

प्रस्तुत शोध पत्र मध्य प्रदेश के सागर जिले में अवस्थित डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के हरीसिंह गौर पुरातात्विक संग्रहालय में संग्रहित कलावेरा की प्रतिमाओं के अध्ययन पर आधारित है। इन कलावेरा प्रतिमाओं में विविध देवताओं का अंकन किया गया है।, जिनमें गणेश, विष्णु, महिषासुरमर्दिनी दुर्गा, तीर्थंकर, देव, युगल दम्पति, ज्यामितिय अलंकरण एवं पशु-पक्षी आदि प्रमुख है। प्रस्तुत शोध पत्र में इन कलावेरा प्रतिमाओं के प्रतिमालक्षण उनकी प्रकृति, शैलीगत विशेषता, अलंकरण तथा काल गणना पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही इन प्रतिमाओं के उद्देश्य, महत्व एवं विशेषता आदि पर गहनता से विचार विमर्श किया गया है। सागर क्षेत्र का संपूर्ण इतिहास समृद्ध एवं वैभवशाली सांस्कृतिक चेतना की हृदयस्थली रहा है। इस अंचल को गुप्त, कलचुरि, राष्ट्रकूट, प्रतिहार, चन्देल एवं परमार राजवंशों ने अपने शौर्य पराक्रम, रचनात्मक क्रियाकलापों एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से सम्पादित करते हुए संरक्षण प्रदान किया। इन शासकों के फलस्वरूप इस क्षेत्र में धार्मिक गतिविधियों के साक्ष्य, स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प के रूप में सर्वत्र दिखलायी देते हैं। इनमें कलावेरा प्रतिमाओं का अपना विशेष महत्व है। इस प्रकार की कलावेरा प्रतिमाएँ (छोटी आकृति की प्रतिमाएँ) मध्य प्रदेश के विभिन्न जिलों से प्राप्त हुई हैं, जिसको विभिन्न संग्रहालयों में रखा गया है। मध्यप्रदेश के सागर जिले में अवस्थित डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के तत्वाधान में विभिन्न पुरास्थलों यथा एरण, त्रिपुरी, मल्हार एवं तुमैन पुरास्थलों